website: www.pawanprawah.com
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2018-2020
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक
एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

तकनीकी व चिकित्सा शिक्षा का प्रशासनिक सेवा मे बढ़ते कदम

हम सभी जानते है कि संस्कार व शिक्षा प्राप्त करने का पहला स्थान घर है और सभी के जीवन में माता-पिता या अभिभावक पहले शिक्षक होते हैं। हम सभी अपने बचपन में, शिक्षा का पहला पाठ, अपने घर विशेषरुप से माँ से ही प्राप्त करते हैं। हमारे माता-पिता जीवन में शिक्षा के महत्व को बताते हैं। जब हम 3 या 4 साल के हो जाते हैं, तो हम स्कूल में उपयुक्त, नियमित और क्रमबद्ध पढ़ाई के लिए भेजे जाते हैं, जहाँ हमें बहुत सी परीक्षाएं देनी पड़ती है, तब हमें एक कक्षा उत्तीर्ण करने का प्रमाण मिलता है। एक-एक कक्षा को उत्तीर्ण करते हुए हम धीरे-धीरे आगे बढ़ते हैं, जब तक कि, हम 12वीं कक्षा को पास नहीं कर लेते। इसके बाद, तकनीकी या व्यवसायिक अथवा पेशेवर डिग्री की प्राप्ति के लिए तैयारी शुरु कर देते हैं, जिसे उच्च शिक्षा भी कहा जाता है। उच्च शिक्षा सभी के लिए अच्छी और विशिष्ट नौकरी प्राप्त करने के लिए बहुत आवश्यक है।

भाग-03

3.0 उच्च शिक्षा का महत्व

हम अपने अभिभावकों और शिक्षको के प्रयासों के द्वारा अपने जीवन में अच्छे शिक्षित व्यक्ति बनते हैं। वे वास्तव में हमारे शुभचिंतक हैं, जिन्होंने हमारे जीवन को सफलता की ओर ले जाने में मदद की। आजकल, शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए बहुत सी सरकारी योजनाएं चलायी जा रही हैं ताकि, सभी की उपयुक्त शिक्षा तक पहुँच संभव हो। ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को शिक्षा के महत्व और लाभों को दिखाने के लिए टीवी और अखबारों में बहुत से विज्ञापनों को दिखाया जाता है क्योंकि पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में लोग गरीबी और शिक्षा की ओर अधूरी जानकारी के कारण अपने बच्चो की उच्च शिक्षा की पढ़ाई कराना नहीं चाहते हैं।

पहले, शिक्षा प्रणाली बहुत ही महंगी और कठिन थी, गरीब लोग 12वीं कक्षा के बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम नहीं हो पाते थे। समाज में लोगों के बीच बहुत अन्तर और असमानता थी। उच्च-वर्ग व घराने के लोग ही अच्छी शिक्षा प्राप्त कर पाते थे और पिछड़ी जाति के लोगों को स्कूल या कॉलेज में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी। आजादी के बाद, अब शिक्षा की पूरी प्रक्रिया और विषय में बड़े स्तर पर परिवर्तन किए गए हैं। भारतीय सरकार के द्वारा सभी के लिए शिक्षा प्रणाली को सुगम और सस्ते लागत की करने के लिए बहुत से नियम और कानून बनाकर उसे लागू किया गया है। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने उच्च शिक्षा को सस्ता और सुगम बनाया है, ताकि पिछड़े क्षेत्रों, गरीबों और मध्यम वर्ग के लोगों के लिए भविष्य में समान शिक्षा और सफलता प्राप्त करने के अवसर मिलें।

यहां यह उधृत करना अति आवश्यक व महत्वपूर्ण है कि भलीभाँति शिक्षित व्यक्ति ही देश के मजबूत आधार स्तम्भ होते हैं और भविष्य में इसको आगे ले जाने में नेतृत्व करते हैं। इस तरह, शिक्षा वो उपकरण है, जो जीवन, समाज और राष्ट्र में सभी असंभव स्थितियों को संभव बनाती है।

अतः जीवन में सफलता प्राप्त करने और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण उपकरण है। यह जीवन के कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने का पाढ़ सिखाने में बहुत मदद करती है। पूरी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किया गया ज्ञान हम सभी और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति आत्मनिर्भर बनाता है। यह जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरवाजे खोलती है जिससे कैरियर के विकास को बढ़ावा मिले। इसी कारण ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा बहुत से जागरुकता अभियान चलाए जा रहे हैं जिससे समाज में सभी व्यक्तियों में समानता की भावना लायी जा सके और देश के विकास और वृद्धि को भी और तेजी से बढ़ावा दिया जा सके।

उपरोक्त तथ्यो के आधार पर, हम बल देकर कह सकते है कि आधुनिक तकनीकी संसार में उच्च शिक्षा ही मुख्य भूमिका निभाती है। आजकल, शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत से नये- नये तरीके अपनाये जा रहे हैं जो हमारी गुरुकुल शिक्षा से बिल्कुल भिन्न है और हरेक क्षेत्र विशिष्ट शिक्षा देने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। शिक्षा का पूरा तंत्र व तकनीक अब बदल दिया गया है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (डिस्टेंस एजूकेशन) के माध्यम से भी नौकरी के साथ ही पढ़ाई भी कर सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं है, कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क पर

प्रवेश ले सकते हैं अथवा नेट के माद्यम से पूर्ण पाठ्यक्रम का वीडिओ अथवा किताबे प्राप्त कर सकते है तथा छोटे-छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

3.1 आई.ए.एस. व पी.सी.एस. परीक्षाओ के आइने मे उच्च शिक्षा

उच्च व उचित शिक्षा भविष्य में आगे बढ़ने के लिए बहुत से रास्तों का निर्माण करती है। यह हमारे ज्ञान के स्तर, तकनीकी कौशल और नौकरी में उच्च पद को प्राप्त करने के द्वारा हमें सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक रुप से मजबूत बनाती है। प्रत्येक बच्चा अपने जीवन में कुछ अलग करने का सपना रखता है। कभी-कभी कुछ माता-पिता भी अपने बच्चे को बड़ा होकर डॉक्टर, इंजीनियर, आई.ए.एस.अधिकारी, पी.सी.एस.अधिकारी या अन्य उच्च पदों पर देखना चाहते हैं। सभी के सपनों को सच करने का केवल एक ही रास्ता है, अच्छी शिक्षा। इस प्रतियोगी संसार में, सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत आवश्यक है। अतः उच्च शिक्षा का महत्व नौकरी और अच्छा पद प्राप्त करने के लिए बहुत अधिक बढ़ गया है।

3.2 आई.ए.एस. व पी.सी.एस. परीक्षाओ मे क्यो बढत पा रहे है डाक्टर व इंजीन्यर्स

प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा, जिसे लोकप्रिय प्रचलन में IAS परीक्षा और राज्यस्तर सिविल सेवा PCS परीक्षा के रूप में जाना जाता है तथा परंपरागत रूप से, यह मानविकी पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों के लिये एक वर्चस्व वाला क्षेत्र माना जाना जाता था। परन्तु हाल के दिनों में आईएएस परीक्षा के बदलते समय और उसके संरचना मे किये गये परिवर्तन के साथ, यह स्थिति लगभग पलट चुकी है। 2010 के बाद से, तकनीकी सम्वर्ग के उम्मीदवारों की संख्या में विशेष रूप से वृद्धि हुई है। यह स्थिति इसलिये विशेष रही है, क्योंकि इंजीनियरों ने न केवल सिविल सेवाओं की तैयारी मे दिन-प्रतिदिन वृद्धि की है, बल्कि इस परीक्षा को नियमित रूप से काफी संख्या मे क्रैक कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में, स्नातक इंजीनियर अंतिम चयन के आंकड़ों के अनुसार आईएएस प्रीलिम्स और आईएएस मेन्स के नतीजों पर अपनी मजबूत पकड़ बना लिए हैं।

इसका मुख्य कारण विशेषज्ञों के आकलन के अनुसार चुंकि मुख्य इंजीनियरिंग क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसरों की बढ़ती कमी हो चुकी है अतः इसे एक अस्थायी घटना बताया गया है। हालाँकि, 2010 के बाद से द्वय मुख्य परीक्षा को क्रैक करने वाले इंजीनियरों की संख्या में लगातार वृद्धि हुई है, जिन्हें अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। IAS प्रारंभिक परीक्षा के जारी आकडो के आकलन से यह स्थिति पिछले तीन वर्षों (2009, 2010 और 2011) में और भी मजबूत हुई है। वर्ष 2012 और 2013 के लिए, आयोग ने पहले की रिपोर्टों के अनुसार अनुशंसित उम्मीदवारों की संख्या के बजाय साक्षात्कार में शामिल उम्मीदवारों की संख्या के लिए आंकड़े प्रकाशित किए थे।

आंकड़ों को देखते हुए, हम स्पष्ट रूप से मूल्यांकन कर सकते हैं तथा एक सामयिक निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि तकनीकी सम्वर्ग के उम्मीदवारों का चयन सिविल सेवा परीक्षा में बढ़ रहा है और 2010 के बाद से मानविकी उम्मीदवारों के चयन की कुल संख्या 50 प्रतिशत से कम हो गई है। 2009 में, कुल उम्मीदवारों की संख्या (11,865), लगभग 47.5 प्रतिशत उम्मीदवार (5631) मानविकी पृष्ठभूमि से थे परंतु इसमे 2010 में एक आश्चर्यचकित गिरावट देखी गयी, जिसमें मानविकी पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों का प्रतिशत 31.3 प्रतिशत तक गिर गया, जो कुल 11237 उम्मीदवारों में से 3515 में बदल जाता है।

2009 के नियुक्ति के लिए अनुशंसित उम्मीदवारों में उच्चतम प्रतिशत शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अनुसार- मानविकी 91.09 प्रतिशत पर, विज्ञान 6.97 प्रतिशत पर, मेडिकल 1.49 प्रतिशत और इंजीनियरिंग 0.46 प्रतिशत पर था। यह स्थिति 2010 में पूरी तरह से बदल गई, जहां तक अनुशंसित उम्मीदवारों की शैक्षणिक पृष्ठभूमि का सवाल है, 0.6 प्रतिशत उम्मीदवार M.Phil / Ph.D योग्यता रखते थे। बाकी में, 40.2 प्रतिशत इंजीनियरिंग से थे, उसके बाद क्रमशः 37.1 प्रतिशत, 11.1 प्रतिशत और 11.0 प्रतिशत मानविकी, विज्ञान और चिकित्सा विज्ञान से थे। जबकि उनके द्वारा शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विपरीत, सफल उम्मीदवारों के बहुमत (92.5 प्रतिशत) ने मानविकी पृष्ठभूमि से वैकल्पिक विषयों का विकल्प चुना गया जो क्रमशः 4.8 प्रतिशत, 1.9 प्रतिशत और 0.8 प्रतिशत विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और इंजीनियरिंग से संबंधित था।

संक्षेप में कहा जाय तो 2010 के बाद से, सिविल सेवा परीक्षा में इंजीनियरिंग स्नातकों का प्रभुत्व बढ़ रहा है, जैसा कि नीचे दी गई तालिका में दिखाया गया है:

क्रमांक शैक्षणिक पृष्ठभूमि सिविल सेवा परीक्षा चयन	2009	2010	2011	2012	2013
1. मानविकी	91.09 प्रतिशत	37.10 प्रतिशत	27.20 प्रतिशत	40.10 प्रतिशत	27.60 प्रतिशत
2. विज्ञान	6.97 प्रतिशत	11.10 प्रतिशत	10.60 प्रतिशत	8.00 प्रतिशत	7.80 प्रतिशत
3. चिकित्सा विज्ञान	1.49 प्रतिशत	11.00 प्रतिशत	14.20 प्रतिशत	14.50 प्रतिशत	13.90 प्रतिशत
4. इंजीनियरिंग	0.46 प्रतिशत	40.20 प्रतिशत	46.00 प्रतिशत	37.40 प्रतिशत	50.70 प्रतिशत
5. एम.फिल./ पी.एच.डी.	लागू नही	0.60 प्रतिशत	2.00 प्रतिशत	लागू नही	लागू नही

उपरोक्त से स्पष्ट है कि इंजीनियरिंग क्षेत्रों में रोजगार के अच्छे अवसरों की बढ़ती कमी के कारण इंजीनियरिंग शैक्षणिक पृष्ठभूमि सिविल सेवा परीक्षा में इंजीनियरिंग स्नातकों का प्रभुत्व अवश्य ही बढ़ रहा है, जिसे अस्थायी घटना बताया जाना सही नही हैं। क्योंकि इंजीनियरिंग पृष्ठभूमि मे उम्मीदवारों के शिक्षण प्रणाली भिन्न है जिसमे लाजिकल शिक्षण का प्रभुत्व अधिक रहता है और वे किसी भी प्रतियोगी परीक्षा मे उनके सफल होने मे कठिनाई नही होती। यहा निम्न बिंदुओ पर विचारकिया जाना नितांत आवश्यक होगा -

प्रश्न उठता है कि यदि इंजीनियरिंग सम्वर्ग के उम्मीदवार अपने क्षेत्र के कार्यो मे रुचि नही लेगे तो देश का विकास कैसे आगे बढेगा ?

इंजीनियरिंग शैक्षणिक पृष्ठभूमि के अध्ययन मे चार साल का समय तथा सरकारी पैसे का भी भारी मात्रा मे खर्च होता है।

अतः इंजीनियरिंग शैक्षणिक पृष्ठभूमि के सफल सिविल सेवको को कार्यदायित्व उनके क्षेत्र से ही सम्बंधित दिया जाना, एक विकल्प के रूप मे देखा जा सकता है। यही स्थिति आगे चलकर चिकित्सा शैक्षणिक पृष्ठभूमि के सफल उम्मीदवारो पर लागू होती है, जो वर्तमान मे तीसरे स्थान पर पहुंच चुके है। ●